Original Research Paper History

अजमेर मेरवाडा के त्यौहार व मेंलों की परम्परायें

cuokjh yky ;kno "kk/kkFkh] bfrgkl o lLdfr foHkkx] jkt-fo-fo-] t ; ipj

KEYWORDS

अजमेर की सांस्कृतिक धरोहर वहां के रीति रिवाज, धार्मिक व त्यौहार होते हैं। सामा. जिक, धार्मिक एवं अन्य अवसरों के रीति रिवाज, त्यौहार आदि मनाये जाने के अपने अपने कारण हैं। यद्यपि वर्श का प्रत्येक दिन तीज त्यौहार से पूरित है, फिर भी इनके मानने के स्थानीय विषेश कारण हैं– मूर्तियां, संत, पैगम्बर, गुरु। उत्सव सामाजिक घटनायें हैं। पूजा उत्सव, धार्मिक, आयोजन उल्लास, खुषी के साथ सम्पन्न किये जाते हैं–दषहरा, नवरात्रि, रक्षाबंधन, जन्माश्टमी, गणेष चतुर्थी, षिवरात्रि ऐसे ही पर्व त्यौहार हैं। सामाजिक उत्सव सोलह संस्कारों से जुड़े हैं। प्राचीन जातीय परम्पराओं से सम्बद्ध कुछ उत्सव मनाये जाते हैं। जडूला, कूएं का पूजन, विवाह, नई फसल आदि पर स्थानिय लोक संस्कृति का भरपूर आनन्द लिया जा सकता है। पीपल, वट, षमी वृक्ष पूजन का अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र में विषेश चलन है। कार्तिक सुदी एकादषी को तुलसी विवाह भी जनमानस की आस्था का प्रतीक है। मान्यताओं के आधार पर स्थानीय देवी देवता की पूजा अर्चना का विधान है। वीर योद्धा, संत पाबूजी, रामदेवजी, मल्लीनाथ जी, गोगाजी, देवनारायण जी, दादूदयाल, मावजी, चरणदास एवं अन्याय मुस्लिम पीर संत आदि के पूर्व उत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाये जाते हैं। सामाजिक रीति रिवाजों के अवसर पर इनकी पूजा का विषेश महत्व है।[1] आम जनता उत्सव प्रिय थी जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार के लोक नृत्यो का आयोजन रखा जाता था। ग्रामीण महिलाएं तालियो के साथ नृत्य से काफी समानता रखता था। इस नृत्य में महिलाये अपने पतियो के साथ नृत्य करती थी।[2] नृत्य करते समय महिलाये गहने व उत्तम वस्त्र को धारण करती थी। जिनदत्तसूरि के उपदेश रसायन रासा से ज्ञात होता है कि पुरूष व महिलाओ द्वारा लगुडा नृत्य मिलकर किया जाता था। यह नृत्य दिन में किया जाता था। तालनृत्य महिलाओ द्वारा रात्रि के समय किया जाता था। रामायण व महाभारत काव्य का वाचन किया जाता थ। सदयवत्सशिवलिंग व नलदमयन्ती की कहानियां सुनाई जाती थी। राजपूत योद्धाओ मे घोडा दौड व शिकार मनोरंजन के प्रमुख साधन थे।[3]

अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र के लोग अपनी वीरता और कर्त्तव्य भाव से ओत प्रोत हैं। वीरता और श्रृंगार जीवन के दोनों पहलुओं का उन्मुक्त दर्षन अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र में ही देखने को मिलता है। वीर गाथाओं का सजीव और सटीक वर्णन यहां की लोक कथ. ाओं और लोक नाट्यों में भरपूर है। अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र में लोकनाट्य अलग–अलग षैली में प्रस्तुत किये जाते हैं।[4] लोक नाट्यों से परे हटकर अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्री संस्कृति का जीवन्त दर्षन यहां प्रचलित नृत्यें में जो पारम्परिक है, होता है। ये पा. रम्परिक नृत्य हैं। घूमर नृत्य का गणगौर के अवसर पर पूर्वी अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र में चलन है।[5] चंग होली पर अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र के अधिकांष भागों में प्रचलित है। लोगों के आचार विचार, व्यवहार संस्कृति का मूल उद्गार है। अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्री संस्कृति ने विष्व में उसे अलग पहचान दी है। यह सर्वश्रेश्ट वीर भूमि है तो कला के रंग में रंगी हुई चित्र भूमि भी है।[6] पॉप म्यूजिक से अधिक प्रभावी अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र के लंगा बन्धुओं ने नाल, पूंगी, बांसुरी, चंग, पखावज की तान पर गोरबंध, चीरमी, मोरिया जैसे लोक गीतों को पैरिस, लंदन, न्यूयार्क, कनाड़ा तक पहुंचाया है। ख्याल, तमाषा, गेर, डांडिया, घूमर, लावणी, लांगा के लोक लुभावने कार्यक्रम टीवी पर महत्व पा रहे है। अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्री भाशा कोमल और गेय है। इसमें अपार साहित्य है। किले, बारीक, नक्कासी, हाथ की कारीगरी विष्व प्रसिद्ध हैं। लोक कला का जितना निखरा हुआ स्वरूप अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र में मिलेगा, अन्यत्र नहीं। अरबी फारसी षोध संस्थान, टोंक एवं प्राच्य विद्या प्रतिश्ठान जोधपुर जैसी षोध संस्थाएं अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र की कलाओं को उजागर करने सक्षम हैं।[7] अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र के सांस्कृतिक परिवेष पर विचार करने के लिए विभिन्न कला क्षेत्रों पर निगाह डालना समीचीन होगा। इसी क्रम में षहर की रेलमपेल से दूर पर्यावरण की दृश्टि से स्वस्थ दूर गांवों में ढाणियों का सिलसिला षुरू हो गया। मिट्टी की सौंध, अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्री व्यंजनों की सुगन्ध और ग्रामीण झलक पर्यटकों का मन मोह लेती है। यहां लोक कलाएं, मांडने, स्थापत्य और काश्ठ कला के साथ लोक संगीत की गूंज, स्वादिश्ट भोजन के मनुहार, षान्त वातावरण अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र को समझने के लिए अच्छा योगदान कर रहीं हैं। अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन को विष्व के समक्ष रखने में यहां के मेले, उत्सव विषेश भागीदार रहे हैं।[8] अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को राज्य के मेले एवं त्यौहारों के माध्यम से प्रचार प्रसार हेतु राज्य का पर्यटन विभाग तीज, गणगौर आदि परम्परागत मेलों में विदेषी पर्यटकों को आकर्शित करने हेतु सुविध ाएं प्रदान करता है। पुश्कर मेला, नागौर मेला में पर्यटन विकास निगम टेन्ट ग्राम बसाता है, जो देषी विदेषी पर्यटकों के ठहरने के लिए होते हैं। अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र में निम्न सांस्कृमिक समारोह आयोजित होते हैं–

पुश्कर मेला,, तीज समारोह, वीर तेजाजी किसान मेला, अजयमेरु उद्योग क्राफ्ट मेला, ओपन हार्य षो, रोज कान्फ्रेंस, नागौर मेला, विष्व पर्यटन दिवस।[9] राजस्थान के सांस्कृ. तिक जीवन में मेलों व त्यौहारों का विषेश स्थान है। यहाँ के त्यौहारों, पर्वों तथा मेलों की अनूठी सांस्कृतिक परम्परा का उदाहरण अन्यत्र मिलना कठिन है। राजस्थान का प्रत्येक मेला व त्यौहार किसी किवदन्ती अथवा किसी ऐतिहासिक कथानक से जुड़ा है। इसीलिए इन अवसरों पर यहाँ की लोकसंस्कृति जीवन्त हो उठती है। इन त्यौहारों, पर्वों व मेलों के अपने गीत हैं, तथा अपनी संस्कृति है।[10] पूर्णिमा को पुष्कर मे बहुत बड़ा मेला भरता है जिसमें बहुत बड़ी संख्या में देष–विदेषों से पर्यटक आते हैं। लोग नारियल, चन्दन, फूल, धूप आदि से पूजन करते हैं, व दीपक पत्तों पर रख. कर पानी पर छोड़ जाते हैं। पुश्कर राज में दीपदान की परम्परा महत्वपूर्ण व पौराणि ाक काल से चली आ रही है। यहाँ ब्रह्माजी के मन्दिर में जाना पुण्य का कार्य माना जाता है। पुश्कर का मेला राजस्थान का सम्भवतः सबसे बड़ा पषु मेला भी है। बीक. ानेरी व जैसलमेरी ऊँट, हरियाणवी बैलों की जोड़ियाँ, घोड़े आदि क्रय–विक्रय के लिये आते हैं।[11] अंग्रेजो के समय पुश्कर मेले के सांस्कृतिक आयोजन व प्रषासनिक व्यवस्था पुश्कर मेला फण्ड के वित्तीय व्यय से की जाती थी।[12]

पुश्कर मेले में घोड़ों का उनके मालिकों द्वारा विभिन्न कलाओं के अन्तर्गत उत्कृश्ट प्रदर्षन किया जाता था। इस हार्स षो केटल फेयर (हेतु फंडिंग कमेटी द्वारा बजट व्यवस्था की जाती थी कि जिसके लिए नियमावली भी निर्धारित की गयी।[13] ब्रिटिश. काल में अजमेर प्रांत के नसीराबाद कस्बे के पास पहले से ही दुधारू पषुओं व यातायात के पषुओं की खरीदफरोख्त की जाती भी तथा इसने एक नियमित पषुमेले का रूप ले लिया।[14] भादवा षुक्ल दषमी को तेजाजी का मेला भरता है। गुर्जर, रा. जपुत व अन्य हिन्दू जातियाँ सर्पदंष से सुरक्षा के लिये इस लोकदेवता की पूजा करती है।[15] श्रावण मास में नवमी पर गोगाजी की मेला भरता है। इस मेले में काफी संख्या में पर्यटकों का आवागमन होता है। इसमें दूध से पूजन किया जाता है।[16] नागौर में आठ दिनों तक पषुओं का मेला लगता है। यहां नागौरी बैल व ऊँटों की क्रय–विक्रय किया जाता है।[17] अजमेर में सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिष्ती की याद में उर्स का मेला लगता है। मुइनुद्दीन चिष्ती को गरीब नवाज भी कहा जाता है। उनकी याद में निर्मित दरगाह अजमेर षहर के बीच में स्थित है। मक्का मदीना के बाद अजमेी की यह दरगाह मुसलमानों के लिये पवित्र स्थान है। कहा जाता है कि ख्वाजा गरीब नवाज जब छः दिन तब अपने हुजरे से बाहर नहीं आये तो खादिमों ने हुजरा देखा तो पता चला कि आपकी रुह जिस्म से परवाज कर गई है। उर्स के दौरान प्रतिदिन ख्वाजा के सेवक हुजरे के दर्षन की कामयाबी के लिये दुआयें मांगी जाती है।[18] देष की सांस्कृतिक परम्परा से जुड़े सभी त्यौहार व उत्सव पूरे रा. जस्थान में मनाये जाते हैं। इन त्यौहारों का उद्देष्य जनता में स्फूर्ति का संचार करना होता है। अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र के प्रमुख लोकपर्व निम्न हैं:– गणगौर, तीज, होली, षीतलाश्टमी, रक्षाबन्धन, दीपावली, गोवर्धन पूजा, पर्युशण पर्व, गणेष चतुर्थी, अक्षय तृतीया, जन्माश्टमी, षिवरात्रि, मकर संक्रान्ति आदि–आदि।मुसलमानों के त्यौहारों में बारह वफात, मुहर्रम, षब–ए–बरात, ईदुल–फितर, ईदुल–जुहा आदि। ईसाईयों का क्रिसमस–डे, गुड–फ्राइडे, ईस्टर आदि। हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सब एक–दूसरे के साथ अपने त्यौहार भी मनाते हैं। इसमें विभिन्न प्रान्तों से आए हुए लोग भी अपने त्यौहार आनन्द से मनाते हैं। जैसे पोंगल, वैसाखी, लोहड़ी आदि।[19] धार्मिक त्यौहारो व उत्सव सूर्य चन्द्र कलाओं पर आधरित थे। अक्षय तृतीया त्यौहार का वर्णन सुण्डा अभिलेख में मिलता है। विभिन्न प्रकार के त्यौहारो विभिन्न धार्मिक समुदायो जैसे शाक्त, वैष्णव, शैव व जैन द्वारा मनाये जाते थे। विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायो द्वारा मनाये जाने वाले उत्सवो मे रथयात्रा का प्रमुख स्थान था। इस उत्सव सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण जानक. ारियां शिलालेखो से भी प्राप्त होती है। विस. 1147 के सादडी व नाडोल शिलालेखो से लक्ष्मीनारायण मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन प्राप्त होता है।[20] इस उत्सव वंश मनाने हेतु संगीत का भी उचित प्रबंध किया जाता था। इस हेतु संगीतकार पीढी दर पीढी मन्दिर की परम्पराओं से संगीत व्यवस्था हेतु प्रशासन द्वारा जोड दिये जाते थे। इस कार्य में बडी धनराशि व्यय होती थी। जिसकी व्यवस्था राज्य व जनता द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता था।[21] लारलाई शिलालेख से ज्ञात होता है कि 1143 ईस्वी में राज्य द्वारा इस उत्सव हेतु एक विशोंपाक व एक पालिका तेल की व्यवस्था की गई थी। लालराई शिलालेख से ज्ञात होता है कि 1176 ईस्वी में शांतिनाथ मंदिर के गुर्जरी रथयात्रा का आयोजन चौहान शासक कीतू के पुत्र द्वारा किया गया था। इस रथ यात्रा में सम्बन्धित देवता की मूर्ति को रथ/रायावाडी पर आसीन किया जाता था।[22] इस आयोजन कि अलावा महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानो की तीर्थयात्रा का प्रचलन भी तत्कालीन समय के समाज में प्रचलित था। हर्ष मंदिर शिलालेख में इस प्रकार की गतिविधियो का उल्लेख मिलता है।[23] विस. 1237 के हस्तिनापुर शिलालेख से ज्ञात होता है कि एक दिगबर जैन खण्डेलवाल परिवार अजमेर से दिल्ली प्रवास गया था

व वहां दिगबंर जैन संतो की मूर्तियां स्थापित करवायी। विस. 1244 में विभिन्न नगरो में इन महत्वपूर्ण मंदिरो की संघ यात्राये निकाली जाती थी। सपाल दक्ष जैन संघ आसावाली (गुरूराज) तक संघयात्रा निकाली थी। पुष्कर को पवित्र स्थान माना जाता था। पुष्कर के समान मेनाल, हर्ष, एकलिंगजी व केकिन्द्र में चौहान शासको द्वारा मंदिरो का निर्माण किया गया।[24] विस. 1226 के बिजौलिया शिलालेख व उत्तम शिखर पुराण से विभिन्न नामो से प्रसिद्ध शिव मन्दिरो का उल्लेख प्राप्त होता है। बिजोलिया के रावती कुण्ड में पवित्र दिनो में स्नान किया जाता था।[25] इस प्रकार हम देखते है कि अजमेर मेरवाडा क्षैत्र मे त्यौहार व परम्पराओ की समृद्धशाली परम्परा रही है।

lUnHk lph %&

1ण राजस्थान का इतिहास, भाग–1, कर्नल टॉड, राजस्थानी ग्रन्थगार जोधपुर, पृ. 64

2ण आर. वी. सौमानी, पृथ्वीराज चौहान एड हिज टाईम्स, पेज 114

3ण जिनदतसूरि, उपदेश रसायनरासा पेज 36

4ण सोषल लाइफ इन मेडिवल राजस्थान, पृ. 91

5ण ।स्पेज व ि जीम म्दहसपी त्मबवतके व ि जीम ।रउमत ब्वउउपेपवदमतए ;1818.1899द्धए 1173ए ट;5द्ध3 टवसण्ण्ए 1861

6ण प्रबन्ध कोष, मुनि जिनविजय, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद, पृ. 227

7ण सांस्कृतिक पर्यटन, डॉ. राजेष कुमार व्यास, राजस्थानी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2011, पृ. 115

8ण । स्पेज व ि जीम म्दहसपी त्मबवतके व ि जीम ।रउमत ब्वउउपेपवदमतए ;1818.1899द्धए 1173ए ट;5द्ध3 टवसण्ण्ए 1861

9ण राजस्थान के लोकनृत्य और लोकनाट्य, डॉ. कालूराम परिहार, रॉयल पब्लिकेषन, 2009, पृ. 36

10ण राजस्थान का धार्मिक अनुषीलन, पेमाराज चौधरी, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृ. 21

11ण डायनेटिक हिस्ट्री ऑफ नार्थन इण्डिया, भाग–2, 1980, दषरर्थ षर्मा

12ण फाईल न. जेड (10) 1, 1848, आर एस ए बी बीकानेर

13ण फाईल न. 2 (3) 23, सन् 1882, आर एस ए बी बीकानेर

14ण फाईल न. 2 (3) 32, सन् 1893, आर एस ए बी, बीकानेर

15ण राजस्थान का इतिहास, हरिषंकर षर्मा, डॉ. सरोज पावा, जयपुर पब्लिषिंग हाउस, जयपुर, 2015, पृ. 495

16ण राजस्थान का इतिहास, हरिषंकर षर्मा, डॉ. सरोज पावा, जयपुर पब्लिषिंग हाउस, जयपुर, 2015, पृ. 496

17ण डायनेटिक हिस्ट्री ऑफ नार्थन इण्डिया, भाग–2, 1980, दषरर्थ षर्मा

18ण अजमेर इतिहास और पर्यटन, षिव षर्मा, षब्द साधना, अजमेर, 2009, पृ. 19–20

19ण राजस्थान का इतिहास, हरिषंकर षर्मा, डॉ. सरोज पावा, जयपुर पब्लिषिंग हाउस, जयपुर, 2015, पृ. 498

20ण अजमेर : जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, मोहनलाल गुप्ता, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2004, पृ. 128

21ण वही, पृ. 129फाईल न. बी (3) 6 1860, आर एस ए बी, बीकानेर

22ण एपिग्राफिया इण्डिका, अंक 11 पेज 158–159

23ण वही, अंक 11 पेज 54

24ण वही, अंक 11 पेज 50

25ण वही, अंक 2 पेज 122

26ण खरतरगच्छ पट्टावली पेज 34

27ण एपिग्राफिया इण्डिका, अंक 26 पेज 126